एम.एच.डी.-22 : कबीर का विशेष अध्ययन
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–22
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–22/टी.एम.ए/2021–2022
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 3 = 30**

(क) कागद केरी नाँव री, पाँणी केरी गंग।
कहैं कबीर कैसे तिरूँ, पंच कुसंगी संग।।

(ख) मेरे मन मैं पड़ि गई, ऐसी एक दरार।
फटा फटक पषाँण ज्यूँ, मिल्या न दूजी बार।।

(ग) कौन मरै कौन जनमै आई,
सरग नरक कौने गति पाई।।
पंचतत अतिगत थैं उतपनाँ, एकै किया निवासा।
बिछुरे तत फिरि सहजि समाँनाँ, रेख रही नहीं आसा।।
जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है, बाहरि भीतरि पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समानाँ, यह तत कथौ गियानी।।
आदैं गगनाँ अंतैं गगना, मधे गगनाँ माई।
कहै कबीर करम किस लागै, झूठी संक उपाई।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) कबीर की भक्ति के मूल उपादानों पर प्रकाश डालिए।

(ii) कबीर के साहित्य में अभिव्यक्त तद्युगीन धार्मिक रूढ़िवाद के विविध रूपों पर विचार कीजिए।

(iii) कबीर के काव्य में निहित व्यंग्य के विविध पक्षों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 5 = 25**

(i) आदिग्रंथ में कबीर
(ii) अनहद नाद, बीज और बिंदु
(iii) कबीर का युग
(iv) कबीर और गुरु अमरदास
(v) कबीर के काव्य में 'माया' की अवधारणा